भुवनेश्वर। ओडिशा के मुख्यमंत्री माननीय नवीन पटनाईक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता।

पोखरा-नेपाल। चीफ जस्टिस द्वारिका मन जोशी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. परिणीता।

राजविराज-नेपाल। हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस ईश्वर प्रसाद खतिवडा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. भगवती।

नोहर-राज.। रक्षाबंधन के अवसर पर डी.एस.पी. ननक राम मीणा को आत्म स्मृति का तिलक देते हुए ब्र.कु. कमला। साथ हैं ब्र.कु. लक्ष्मी।

कोटद्वार। चर्च के फादर जॉन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुमन।

कोटा-वल्लभ नगर(राज.)। डिस्ट्रीक्ट कलेक्टर डॉ. रवि कुमार सुरपुर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति।

ज्ञानी पुरुष में निमित्त भाव होता है सर्वोपरि

अर्जुन ने भगवान से एक और महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा कि सभी यज्ञों में श्रेष्ठ यज्ञ कौनसा है?

भगवान कहते हैं कि हे अर्जुन! सर्व यज्ञों में ज्ञान यज्ञ अति श्रेष्ठ है। ज्ञान का चिंतन मनन करो। इससे बुद्धि में शक्ति आयेगी। क्योंकि ``ज्ञान में शक्ति है'' तो सभी यज्ञों में ज्ञान यज्ञ अति श्रेष्ठ है। क्योंकि ज्ञान माना समझ, समझ से जब हम अपनी आत्मा के शुद्धिकरण की प्रक्रिया में लगते हैं तो उससे परमकल्याणकारी और कोई नहीं है। क्योंकि महान पाप आत्मायें भी ज्ञान नैय्या द्वारा ही संसार सागर को पार कर लेते हैं। जिस प्रकार अग्नि ईंधन को भस्म कर देती है, वैसे ही ज्ञान में वो शक्ति है जो विकर्मों को भस्म कर देती है। सर्व विकर्म और साधनों की आसक्ति और मोह को समाप्त कर ज्ञान-योग की परिपक्व अवस्था से ही आत्मा शुद्ध और पवित्र बन जाती है। ज्ञान में वो शक्ति है, जो आत्मा के सर्व पूर्व विकर्म को दग्ध कर सकती है और हमारी परिपक्व अवस्था बना सकती है और आत्मा को पवित्र बनने की विधि बता सकती है।

भगवान ने आगे कहा कि - जिसने इंद्रियों को संयमित कर वासनाओं को जीता है, साधनों में असक्ति नहीं है तथा परमात्मा में श्रद्धा विश्वास है, वही ज्ञान की पराकाष्ठा को प्राप्त कर सकता है, अर्थात् सर्वोच्च स्थिति को प्राप्त कर सकता है। ज्ञान मार्ग में पुरुषार्थ में अग्रसर होकर के परम शांति को प्राप्त कर लेता है। विवेकहीन, श्रद्धा रहित, संशययुक्त आत्मा पुरुषार्थ के मार्ग से भ्रष्ट हो जाती है। इसलिए कहा जाता है - `संशय बुद्धि विनश्यन्ति' जो विवेकहीन हैं, श्रद्धा रहित हैं, संशययुक्त आत्माएं हैं, वे पुरुषार्थ के मार्ग से भ्रष्ट हो जाती हैं और परमसुख की अनुभूति से वंचित हो जाती हैं। इसलिए हे धनंजय! परमात्मा के प्रति समर्पण भाव से और कर्मयोग की विधि से तथा ज्ञानयुक्त विवेक की तलवार से, अज्ञान से उत्पन्न संशय का नाश कर समत्व भाव से कर्म करो तो सर्व प्रकार के बंधनों से मुक्त हो जाओगे। ये समर्पण भाव विकसित करने की प्रेरणा भगवान ने अर्जुन को दी और इस तरह से यहाँ पर चौथा अध्याय समाप्त हो जाता है।

पाँचवे अध्याय में भगवान बताते हैं कि सन्यास योग और कर्मयोग में क्या अंतर है।

ज्ञानी पुरुष दिव्य ज्ञान की अग्नि से शुद्ध होकर बाहरी रूप से सारे कर्म करता है अर्थात् निमित्त भाव से सारे कर्म करता है, किन्तु अन्तर में उस कर्म के फल का परित्याग करता हुआ शांति, विरक्ति, सहनशीलता, आध्यात्मिक दृष्टि तथा आनंद की प्राप्ति कर लेता है।

इस अध्याय में पहले श्लोक से लेकर छठवें श्लोक तक सन्यास योग और कर्मयोग में, निष्काम कर्मयोग को श्रेष्ठ बताया गया है।

सातवें श्लोक से बारहवें श्लोक तक सन्यास योग और कर्मयोग के लक्षण और उसकी महिमा बतायी गई है।

तेरहवें श्लोक से छब्बीसवें श्लोक तक ज्ञानयोग का विषय लिया गया है और सत्ताइसवें श्लोक से उन्तीसवें श्लोक तक भक्ति सहित ज्ञान योग का वर्णन किया गया है।

यहाँ पर पुनः अर्जुन एक प्रश्न पूछता है कि सन्यास योग और कर्मयोग में क्या अंतर है? भगवान उसका उत्तर देते हुए कहते हैं कि सन्यास का मतलब ये नहीं कि कोई घर-गृहस्थ का सन्यास कर दे, कोई ज़िम्मेवारियों का सन्यास कर दे, कोई अपने कर्त्तव्यों का सन्यास कर दे, नहीं। उसको सन्यास योग नहीं कहा जाता है। सन्यास योग एवं कर्मयोग दोनों ही श्रेष्ठ है, क्योंकि दोनों ही जैसे एक दूसरे के पूरक हो जाते हैं। जो मनुष्य कर्म करता हुआ किसी के साथ न द्वेष करता है और न किसी कर्मफल की इच्छा रखता है वह सदा सन्यासी जानने योग्य है।

हमारी दादी माँ जैसा कोई नहीं...

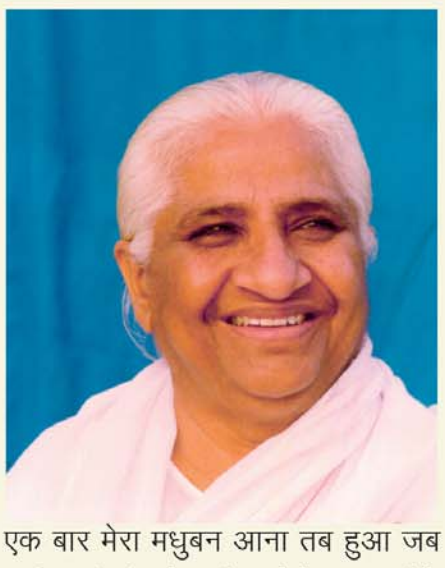

दादी की तस्वीर देख आँखों से आँसू बहने लगे। लग रहा था अभी दादी आकर मुझे प्यार से ममता से गले लगायेंगी और मेरे सिर पर हाथ रखेंगी। मैं दादी जी से बातें करती और रोती, मुझे कोई देख रहा है या नहीं ये कुछ भी खबर नहीं, बस उस वक्त तो एक बेटी अपनी माँ की गोद में समाना चाहती थी।

एक बार मेरा मधुबन आना तब हुआ जब बड़ी दादीजी को शरीर छोड़े कुछ महीने बीत चुके थे। जहां आज प्रकाश स्तम्भ है, वहां उस जगह काम चालू था, बीच में छोटे मंदिर की तरह चार स्तम्भ खड़े थे और दादी जी का फोटो था, नीचे चारो तरफ काम चालू होने के कारण लाल गीली मिट्टी थी, बैठने को कुछ भी नहीं था, मैं वहीं खड़ी हो गई। दादी की तस्वीर देख आँखों से आँसू बहने लगे। लग रहा था अभी दादी आकर मुझे प्यार से ममता से गले लगायेंगी और मेरे सिर पर हाथ रखेंगी। मैं दादी जी से बातें करती और रोती, मुझे कोई देख रहा है या नहीं ये कुछ भी खबर नहीं, बस उस वक्त तो एक बेटी अपनी माँ की गोद में समाना चाहती थी।

मैं जब पहली बार अपनी लौकिक ननद के समर्पण समारोह में आई थी, मैं सामने कुर्सी पर बैठी थी और सामने दादी जी को देख रही थी। मुझे उन्हें देखना अच्छा लगता था, तब मेरे मन में आया, इतनी ऊँची हस्ती, पवित्रता की मूरत, यह शायद हमसे दूर ही रहेंगी, मुझे इनके पास नहीं जाना चाहिए। कार्यक्रम पूरा होने के बाद सभी के परिवारों के सदस्य दादियों से मिलने जा रहे थे, मैं बैठी थी, तब इतनों के बीच दादीजी ने मेरी तरफ नज़र डाली और हाथ के इशारे से मुझे बुलाया, मैं तो उनकी नज़र को बस देखती ही रही। ऊपर स्टेज पर गयी तो मेरे हाथों में छोटा बेटा 2 साल का था। दादी जी ने पहले उसे अपनी गोद में बिठाया फिर

ब्र.कु. रंजना,गामदेवी मुम्बई

प्यार भरी दृष्टि देकर मेरे सिर पर हाथ फिराया। मैं उन्हें देखती रही क्योंकि मैं जान चुकी थी कि मेरे मन की बात दादी जी ने सुन ली है। दादीजी कोई आम दादी नहीं थीं, और उसी प्यार की चाहत में मैं दादीजी को निहारती इस वक्त उन्हीं यादों में खो गयी थी और दादीजी को देख रही थी, इसी बीच न जाने कितने घंटे बीत गए। मैं उस स्थान से हिल ही नहीं रही थी, फिर एक भाई ने आवाज़ लगाई बहन जी...ओ बहन जी... वह भाई पानी का पईप लेकर मिट्टी में पानी डाल रहा था। मैं फिर धीरे-धीरे अपने आपको समझाकर वहां से निकली। जब तक वहां रही, रोज़ दादीजी से मिलती, बातें करती। कभी भी ऐसा नहीं लगता कि दादीजी हमारे बीच में नहीं है।